



# भारत का राजपत्र

## The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (ii)  
PART II—Section 3—Sub-Section (ii)  
प्राप्तिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

8/2  
27/11

६. ५७१] नई दिल्ली, बुधवार, सितम्बर 13, 1989/भाद्र 22, 1911  
No. 571] NEW DELHI, WEDNESDAY, SEPTEMBER 13, 1989/BHADRA 22, 1911

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या वी आती है जिससे कि वह भलग संकलन के काम से  
रक्षा या उसके

Separate Paging is given to this Part in order that it may be filed as a  
separate compilation

वित्त मंत्रालय  
(राजस्व विभाग)  
केन्द्रीय प्रत्यक्ष कार बोर्ड  
श्रद्धसूचनाएँ  
नई दिल्ली, 13 सितम्बर, 1989  
घन-कर.

का.आ। 720(अ) :- केन्द्रीय प्रत्यक्ष कार बोर्ड जन कर. अधिनियम, 1957 (1957 का 27) की घार 46 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए घन-कर नियम, 1957 का भी संशोधन करने के लिए निम्न-लिखित नियम बनाता है, अर्थात् :-

1. (1) इन नियमों का संक्षिप्त नाम घन-कर (तृतीय संशोधन) नियम 1989 है।

(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होगी।

2. घन-कर नियम, 1957 में नियम, 12 के स्थान पर, निम्न-लिखित नियम रखा जाएगा. अर्थात् :-

"12-अधिनियम के किसी उपबन्ध के अधीन निर्धारिती द्वारा देय घाज की या केन्द्रीय सरकार द्वारा निर्धारिती को देय व्याप्र की संगठन करने समझ-

- (क) जहां व्याज का परिकलन व्यापिक घावार पर किया जाना है, वही वह अवधि जिसके लिए ऐसे घाज का परिकलन किया जाता है पूरे मास या मासों में पूर्णांकित की जाएगी और इस प्रयोजन के लिए मास के किसी भाग की उपेक्षा कर दी जाएगी; और इस प्राप्त अवधि के अन्तर्गत वह अवधि समझी जाएगी जिसकी वावत व्याज का परिकलन किया जाना है;
- (ख) जहां व्याज का परिकलन प्रत्येक मास या किसी अद्याहि में समाविष्ट किसी मास के भाग के लिए किया जाना है, वही मास के किसी भाग को पूर्ण मास समझा जाएगा और व्याज का इस प्रकार परिकलन किया जाएगा।
- (ग) कर, शास्ति की रकम सा अन्य राशि, जिसकी वावत ऐसा व्याज परिकलित किया जाता है, एक सौ रुपये के निकटतम गुणज तक पूर्णांकित की जाएगी और इस प्रयोजन के लिए एक सौ रुपये के किसी भाग की उपेक्षा कर दी जाएगी; और इस प्रकार पूर्णांकित रकम वह रकम समझी जाएगी जिसकी वावत व्याज का परिकलन किया जाना है।

[फा.सं. 8451/142/3/89-टी वी एल]

**MINISTRY OF FINANCE  
(Department of Revenue)  
Central Board of Direct Taxes  
NOTIFICATIONS**

New Delhi, the 13th September, 1989

**WEALTH-TAX**

S.O. 720(E).—In exercise of the powers conferred by section 46 of the Wealth-tax Act, 1957 (27 of 1957), the Central Board of Direct Taxes hereby makes the following rules further to amend the Wealth-tax Rules, 1957, namely:—

1. (1) These rules shall be called the Wealth-tax (Third Amendment Rules, 1989).

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Wealth-tax Rules, 1957, for rule 12, the following rule shall be substituted, namely:

“12. In calculating the interest payable by the assessee or the interest payable by the Central Government to the assessee under any provision of the Act,—

(a) where interest is to be calculated on annual basis, the period for which such interest is to be calculated shall be rounded off to a whole month or months and for this purpose any fraction of a month shall be ignored; and the period so rounded off shall be deemed to be the period in respect of which the interest is to be calculated;

(b) where the interest is to be calculated for every month or part of a month comprised in a period, any fraction of a month shall be deemed to be a full month and the interest shall be so calculated;

(c) the amount of tax, penalty or other sum in respect of which such interest is to be calculated shall be rounded off to the nearest multiple of one hundred rupees and for this purpose any fraction of one hundred rupees shall be ignored; and the amount so rounded off shall be deemed to be the amount in respect of which the interest is to be calculated.”

[No. 8451|F. No. 142|3|89-TPL]

दान-कर

का. आ. 721 (अ) :—केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड, दान-कर अधिनियम 1958<sup>3</sup> (1958 का 18) की धारा 46 द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, दान-कर नियम, 1958 का और संशोधन करते के लिए निम्नलिखित नियम बनाता है, अर्थात् :—

1. (1) इन शक्तियों का संक्षिप्त नाम दान-कर द्वितीय (संशोधन) नियम, 1989 है।

(2) ये राजपत्र में प्रकाशन की तारीख को प्रवृत्त होने।

2. दान-कर नियम, 1958 में नियम, 13 के द्वारा पर निम्नलिखित नियम रखा जाएगा, अर्थात् :—

13. अधिनियम के किसी उपबन्ध के अधीन निर्धारित द्वारा देय व्याज या निर्धारिती को केंद्रीय सरकार द्वारा देय व्याज की संगणना करते समय :—

(अ) जहाँ व्याज का परिकलन वार्षिक आवार पर किया जाता है, वह व्याज, जिसके लिए ऐसे व्याज का परिकलन किया जाया है पूरे मास या मात्राएँ में पूर्णांकित की जाएगी और इस प्रयोजन के लिए मास के किसी भाग की उपेक्षा कर दी जाएगी; और इस प्रकार पूर्णांकित अवधि वह अवधि समझी जाएगी जिसकी बाबत व्याज का परिकलन किया जाना है;

(ब) जहाँ व्याज का परिकलन प्रत्येक मास या किसी अवधि में समाविष्ट किसी मास के भाग के लिए किया जाना है, वह मास के किसी भाग को पूर्ण या मात्राएँ समझा जाएगा और व्याज का इस प्रकार परिकलन किया जाएगा।

(ग) कर, शास्ति की रकम या अन्य राशि किसकी बाबत एसा व्याज परिकलित किया जाना है, एक सौ रुपए के निकटतम गुणज तक पूर्णांकित की जाएगी और इस प्रयोजन के लिए एक सौ रुपए के किसी मास की उपेक्षा कर दी जाएगी और इस प्रकार पूर्णांकित रकम वह कम समझी जाएगी जिसकी बाबत व्याज का परिकलन किया जाना है।

[सं. 8450 फा. सं. 142/3/89-डी पी एल]

अरबिन्द मोदी, अवर सचिव

**GIFT-TAX**

S.O. 721 (E).—In exercise of the powers conferred by section 46 of the Gift-tax Act, 1958 (18 of 1958), ie Central Board of Direct Taxes hereby makes the following rules further to amend the Gift-tax Rules, 1958, namely:—

1. (1) These rules shall be called the Gift-tax (Second Amendment) Rules, 1989.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Gift-tax Rules, 1958, for rule 13, the following rule shall be substituted, namely:—

“13. In calculating the interest payable by the assessee or the interest payable by the Central Government to the assessee under any provision of the Act,—

(a) where interest is to be calculated on annual basis, the period for which such interest is to be calculated shall be rounded off to a whole month or months and for this purpose any fraction of a month shall be ignored; and the period so rounded off shall be deemed to be the period in respect of which the interest is to be calculated;

(b) where the interest is to be calculated for every month or part of a month comprised in a period, any fraction of a month shall be deemed to be a full month and the interest shall be so calculated;

(c) the amount of tax, penalty or other sum in respect of which such interest is to be calculated shall be rounded off to the nearest multiple of one hundred rupees and for this purpose any fraction of one hundred rupees shall be ignored; and the amount so rounded off shall be deemed to be the amount in respect of which the interest is to be calculated.

[No. 8450|F. No. 142|3|89-TPL]  
ARBIND MODI, Under Secy.